Chapter-6

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY The M. S. University of Baroda

षष्ठ अध्याय :

गुजरात में साम्प्रदायिक साहित्य का वैशिष्ट्य

* विभिन्न सम्प्रदाय के साहित्य रस के विभिन्न तत्वों का प्रयोग
* विभिन्न सम्प्रदाय के साहित्य रस के विभिन्न छन्दों का प्रयोग
* गुजरात के संत कवियों द्वारा उनकी रचनाओं में अलंकार का प्रयोग
* गुजरात के संत कवियों की भाषा
* संगीत
* गुजरात के संत कवियों द्वारा साहित्य में मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग

षष्ठ अध्याय :

गुजरात में साम्प्रदायिक साहित्य का वैशिष्ट्य

कला का व्यवहार व्यापक और संकीर्ण दोनों अर्थों में होता है। व्यापक अर्थ में वह मनुष्य की आंतरिक चेतना से गंभीर रूप में संबद्ध एक सत्य है और उसके सौन्दर्य प्रिय स्वभाव की सहज अभिव्यक्ति है। संकीर्ण अर्थ में उसे जिज्ञाशा एवं आश्चर्य उत्पन्न करने की एक प्रक्रिया मात्र कहा जा सकता है जिसकी मौलिक प्रेरणा अपेक्षाकृत बाह्य है और जिसका सम्बन्ध बुद्धि कौशल से अधिक है। काव्य में जहाँ भावपक्ष की प्रधानता है वहाँ उसके कलापक्ष की भी कम महता नहीं है। अभिव्यक्ति के क्षेत्र का जितना भी विस्तार है उस सब में कला की गति है। अनुभूति की सीमा से जहाँ भी कोई भाव अभिव्यक्ति की सीमा में पहुँचा नहीं उसे कला की अपेक्षा होती है, भले ही कवि असजग होकर उसका प्रयोग करे अथवा सजग होकर। अभिव्यक्ति परक अतिशय सजगता कभी-कभी कवि को भाव से विच्छिन्न कर देती है और श्रेष्ठ कला के लिए अनुभूति और अभिव्यक्ति को जो सामजस्य अपेक्षित है वह नष्ट हो जाता है। ऐसी दशा में कला विकृतहोने लगती है और काव्य का प्रभाव भी समुचित रूप में नहीं हो पाता । अन्ततः कला भावाभि व्यक्ति का साधन ही है, साध्य नहीं। यों एक मत उसे साध्य भी मानता है और इस धारणा के अनुरूप काव्य रचने की परम्परा भी रही है ।[1]

रस

रस काव्य के प्रमुख तत्वों में से एक है जो काव्यानुशीलन से प्राप्त आनन्द से मिलता है। गुजरात के संत-भक्त कवियों ने अपने काव्यों में विभिन्न रसों का समावेश किया हैं। सम्प्रदाय मुक्त एवं सम्प्रदाय निबध्द भक्त कवियों, वैष्णव कवियों ने कृष्ण और रास की बाल लीलाओं, रूप-सौन्दर्य गुण तथा अन्य लीलाओं का भक्ति भाव से वर्णन करते हुए अपनी रनचाओं में वास्तल्य तथा शृंगार रस का सुन्दर निरुपण किया है। इष्ट देव या आराध्य देव अथवा आश्रयदाता के जीवन चरित या आख्यान निरूपण के कारण वीर, शांत आदि अन्य रसों का भी समावेश हुआ है।

रति रसराज शृंगार का स्थायी भाव हैं वैष्णव कवियों ने राधा-कृष्ण और कृष्ण गोपी की लीलाओं का शृंगारिक चित्रण किया हैं। गुजरात के संतों ने आत्मा परमात्मा के दाम्यत्य भाव के रूपकों द्वारा संयोग और वियोग शृंगार का निरूपण किया है।

शृंगार रस

प्रीतम ने कृष्ण गोपी-प्रेम का वर्णन बड़े उल्लास के साथ किया है। यहाँ पर शृंगार रस का उत्तम उदाहरण दृष्टव्य है।

काहुने मोरली लिनी मरोरी, लीयो है पीतांबर छीन।
काहुने आँख आंज लालन कि, काहु मुख चुमन कीन।
गावत गारि बजावत तारी हो हो हो रे कहाँन।
जब राधाजी के पेया परोगे, तबही पाबोगे ज्यांन॥

शृंगार रस का एक उदाहरण विनयचंद्र प्रणीत थूलिभद्र ''बारहमासा''[2] कृति में से यहाँ पर दृष्टव्य है।

''अषाढ़इ आशा फली, कोशा करइ सिणगारो जी।
अवउ थूलिभद्र वालहा, प्रियुडा करू मनोहारोजी।
मनोहार सार शृंगार-रसमां, अनुभवी यथा तरवरा।
वेलीडी वनिता लाइ आलिंगन, भूमि भामिनी जलधारा''

वियोग श्रृंगार :

कृष्ण के विरह में वर्षा ऋतु में छाए बादल, पपीहे की पिहु-पिहु, मोर और कोयल की कूक, गोपी की विरह-व्यथा को बढ़ा देती है। वहीं संत-काव्य में आत्मा की विरह-व्यथा को प्रकृति-सौंदर्य, पशु-पक्षी आदि के उद्दीपनों द्वारा अभिव्यक्ति मिली है वैष्णव कवि दयाराम ने गोपी की विरह-व्यथा को इन पंक्तियों मे अभिव्यक्त किया है -

'' अेक श्रावन मेरे आंगन बरषे, दुज्यो सावन दृग टबके नीर,
आवन की आली अवध बीत गयी, बीकल भयो मन धरेन धीर।
केहें भटु अब कब ज्यों मीलेंगे, दया को प्रीतम बल को बीर।[3]

वस्तो विश्वभंर का रोम-रोम प्रभु के दर्शन के लिए जल रहा है-

रोम रोम में विरह लगा, अन्य कंशु न सुहाय।
वस्ता विश्वभंर जब मळे, तन मन शीतल थाय।[4]
बिरह अनल उर में बढ़यो, ताते कहत कठोर।
मुक्त कहे बिरहनी पीयु बिना, झरत है निशि भोर।।[5]

यहाँ पर कबीर के समान ही मुक्तानंदजी ने प्रियतम रूपी भगवान के लिए व्यथित संत रूपी विरहिणी का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि प्रिय ही मेरा जीवन - प्राण है। जिस प्रकार प्रिय के विदेश जाने पर विरहिणी के हृदय में विरह रूपी अग्नि जल पड़ती है, चैन नहीं आता, निश-दिन रोते-रोते बीत जाते हैं, रोते-रोते नैन धुंधल पड़ जाते हैं और गुन गाते-गाते जीभ घिस जाती है, उसी प्रकार भगवान के विरह में भक्तजन बेहाल एवं बैचेन रहते हैं। संत जन इश्वर के प्रति दृढ़ प्रेम का अनुभव करते हैं।

शांत रस :

मध्यकालीन संतों की वाणी में शांत रस की प्रधानता है। वैष्णव एवं विभिन्न सम्प्रदाय के कवियों ने भी शांत रस से सिक्त काव्य-रचनाएँ की है। शांत के मूल भाव निर्वेदका संतों की विचार धारा के साथ बड़ा मेल रहा है।तत्व ज्ञान होने पर, देह की नश्वरता, आत्मज्ञान, आत्म-निवेदन आदि में शांत रस की उत्पत्ति होती है।

दम का भरोसा मत कर भाई साधन करंदा साई,
साधन करंदा साई, में वारी वत्या।
पाप पलक की खबर न जाने, करे काल की आसा,
रिस पर जमरा झड़प रह्या है, न छोड़े जंगल वाला।[6]

दयाराम के अनुसार दुखी को अपना दुःख और सुखी को अपना गर्व दूर करने के लिए दोनों को क्रमश : अपने से अधिक दुखियों को तथा सुखियों को देखकर शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत कर देना चाहिए -

सुख-दुःख पचवन दोह को, ये ही है उपचार।
अधिको लखिये आप तें, क्लेश गर्व संहार[7]

इस प्रकार स्वामीनारायण सम्प्रदाय के प्रख्यात स्वामी ब्रह्मानंद भी दुन्यवी सुखों को त्याग कर हरि की सेवा में लीन होकर हरि चरणों का जाप करने पर बल देते हैं-

छोड़ दुनिया के मजे, सब बैठकर एकान्त में।
ध्यान धर हरि के चरण का, फिर जनम नहीं आयेगा।
दृढ़ भरोसा करके मन में, जो जपे हरिनाम को।
कहते है ब्रह्मानंद, ब्रह्मानन्द बीच समायेगा।।[8]

वीर रस :

संतों द्वारा मन और इन्द्रियों को वश में करने तथा साधना के प्रयासों में सेना, सिपाही, तोप युद्ध आदि के रूपकों में वीर रस की झलक मिलती है। जैन चन्द्रकीर्ति कृत जयकुमार आख्यान में से उद्धृत जयकुमार और अर्ककीर्ति के बीच युद्ध का एक प्रसंग यहाँ अवलोकनीय है - जिसमें युद्ध का वर्णन अत्यन्त मनोरस एवं स्वाभाविक बन पड़ा है।

''हस्ती हस्ती संघाते आथंडे, रथो रथ सूभट सहू इम भड़े ।
हय हयारव जब छजयो, नीसांण नादें जग गज्जयो ।।[9]

वीर रस का एक अन्य उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है-

''रण मिसाण बजाय सकल सैन्या तव मेली ।
चढ्यो दिवाजे करि कटक करि दश दिश भेली ।।

हस्ति तरंग मसूर भार करि शेजण शंको ।
खड़गादिक हथियार देखि रवि शशि पण कंप्यो ॥
पृथ्वी आंदोलित थई छत्र चमर रवि छादयो ।
पृथु राजा ने चरे कहयो, ल्याघ्र राम तवे आवयो॥[10]

रविसाहब का वीर रस से परिपूर्ण एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है-

''मैं सिपाही सत्गुरु साहेब का, लड़ूँ तोप बख्तर पहेरी,
शील, संतोष का बख्तर पहेरुं, लऊँ शमशेर सत्गुरु केरी,

आख्यान काव्यों तथा चरित काव्यों में शृंगार शांत रस, वीर रस के अतिरिक्त रौद्र, करुण आदि रसों का भी निर्वाह हुआ है। संत काव्य का प्रमुख रस शांत रस है। किन्तु देह की नश्वरता एव नारी-निंदा में जुगुप्साजनक वर्णन होने से वीभत्स रस का भी समावेश हो गया है।

छंद :

छन्द विधान वास्तव में कविता की सबसे प्रमुख विशेषता है। छन्द शब्द ''छंद'' धातु में ''असुत'' प्रत्यय जोडने से बना है। छंद धातुका अर्थ होता है प्रसन्न करना, फुसलाना, आच्छादन करना, बांधना, आल्हादित करना इत्यादि। इन्हीं अर्थों के आधार पर छन्द शब्द का अर्थ सामान्यतया प्रसन्न करनेवाली वस्तु इच्छा, आच्छादन बन्धन आदि लिया जाता है। वैदिक साहित्य में मंत्रों को छन्द भी कहते हैं। आगे चलकर छन्द शब्द समान्यतया वेद के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। साहित्य में छन्द शब्द एक विशेष परिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त होता है। उसकी परिभाषा इस प्रकार है-

मतवरण गति यति नियम अन्तहि समता बन्द ।
जायद रचना में मिलें मानु मनत स्वच्छंद॥ (छन्द प्रभाकर)

अर्थात जिस कविता में मात्राओं और वर्णो के क्रम, गति और यति के नियम तथा चरणान्त की समता पायी जाती है, उसे छन्दबद्ध कविता कहते हैं।

गुजरात में मध्यकालीन हिन्दी सहित्य में बारहवीं शती से आज तक विविध प्रयोग हुए है। इस काल में मुख्यतः आख्यान, पद तथा मुक्तक शैली का प्रयोग हुआ है। ईसरदास,

सायांजी आदि द्वारा रचित चरित काव्य; अखा, मीरा, कृष्णदास आदि कवियों द्वारा रचित पद एवं मुक्तक काव्यों की रचना मिलती है।

आख्यान शैली में रचना 'कडवाबद्ध' होती हैं जो एक प्रकार की छन्द योजना है। इसमें प्रारम्भ में दो पंक्तियों का मुखबन्ध (1 पद) उसके बाद ढाल और अन्त में दो पंक्तियों का दलण (1 पद) होता है।

पद शैली में विभिन्न छन्दों जैसे-सार छन्द, ताटक छन्द विष्णुपद छन्द, उपमान छन्द, समान सवैया, सरसी छन्द, झूलना आदि का प्रयोग होता है। पदों में गेयता होती है।[12]

गुजरात के प्रायः सभी संतों ने तपलपदीय परबन्धों (देशियों) के साथ दोहा, चौपाई, सोरठा, कुंडलिया, छप्पा, सवैया, झूलणा, हरिगीतिका, सुमुखि, दुर्मिल, धनाक्षरी कवित, अरिल्ल, भुजंगी, मनहरण, गजल, लावणी, आदि विविध छन्दों का प्रयोग किया है। गुजरात के हिन्दी संतों की प्रवृत्ति मात्रिक छन्दों की ओर अधिक दिखाई देती है।

जैन कवियों का समस्त काव्य छन्दोबद्ध है। उन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में मात्रिक और वर्णित दोनों छन्दों का प्रयोग किया है। अधिकांश गुजराती जैन कवियों ने दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित, कुंडलिया, सवैया, छप्पय, हरिगीतिका आदि छन्दों का प्रयोग किया है।

वैष्णव कवियों ने विभिन्न छन्दों से युक्त तथा राग-रागनियों से बद्ध काव्य-रचना की हैं। इन्होंने दोहा, चौपाई, छप्पय, कुंडलिया, सोरठा, अरिल्ल, नराच, दण्डक, मत्तगयंद, हरिगीतिका, रोला, कवित्त आदि विभिन्न छन्दों में काव्य-रचना की है।

दोहा :

यह मात्रिक अर्ध्दसम छन्द है। इसके पहले और तीसरे चरण में 13 तथा दूसरे और चौथे में 11 मात्राएँ होती हैं। विषम चरण के प्रारम्भ में जगण नहीं होना चहिए और सम के अन्त में लघु होना आवश्यक होता है। यहाँ पर मुक्तानंद काव्यम् में से एक उदाहरण दृष्टव्य है-

श्रीबद्रिपति चरण रज, वंदु बारमबार।
जो मुनि सम तप करत प्रभु, करत विश्व उद्धार॥[13]

अन्य अेक उदाहरण वैष्णव कवि केशवदास के काव्य में से उद्धृत है-

जलविना जलचर जम दहे, विण घन चातुक मेह।
त्यम हरिणाक्षी हरि विना, दाझे विरहे देह ॥28॥[14]

''सर्वातीत सब जा विषे, सब समेत सब शून्य
स स्वरूप स्फुरत भयो सोहि ज्ञान नहिं बन्य। (अखा) [15]

जैनकवि उदयराज की ''वेध विरहिणी'' प्रबन्ध कृति से एक दोहा देखिए -

को विरहिन जिय सोच में धर अपनी जिय आस।
रिगत पान क्यों कर दनै, गयौ वैद पै पास ॥1॥''

सोरठा :

इस में 11 और 13 के विराम से कुल 48 मात्राएँ होती है। विषम चरण (पहले और तीसरे) में तुक मिलती है।

लगभग सभी कवियोंने सोरठा छन्द का अधिकाधिक प्रयोग किया है । चौपाई के साथ दोहों के स्थान पर तथा पृथक रूप से भी सोरठा छंद में कविताएँ की है। श्री यशोविजय जी रचित ''दकृपट चौरासी बोल'' से एक सोरठा उदधृत है-

''दाई घड़ी के फेर, केवल मानैं भरत कौ,
बड़ो मोहं को घेर, भाव प्रभाव गनैं नहीं॥[16]
प्यारे चित विचार लें, तुं कहा से आया।
बेटा बेटी कवन हे, किसकी यह माया। ज्ञान चंद[17]

ब्रजभाषा में सोरठे में काव्य-रचना माधवदास सेवक आदि अनेक कवियों ने की है। गुजराती कृष्ण काव्य में भीम और केशवदास ने ही व्यवहृत किया है। [18]

कवित :

यह ब्रजंभाषा का प्रिय छन्द रहा है। चारण बन्दीजनों की रचनाएँ प्रापः इसी छन्द में हुई हैं।

यह दंडक वर्णवृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। आठ-आठ और सात

वर्णो पर यति होती है। इसका अंतिम वर्ण गुरु होता है। जैन कवि किशनदास कृत ''उपदेश बावनी'' मनहर कवित्तों में की गइ उत्तम रचना है। इस रचना का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

''जीवन जरा-सा दुःख जनम जरासा तामे,

डर है खरा-सा काल शिर पे खरा-सा है।

कोउ विरला-सा जो पै जीवै द्वै पचासा अन्त,

बन बीच बासा यह बात का खुलासा है।

संध्या का-सा बान काखिर का-सा कान चल,

दल का-सा पान चपला का-सा उजासा है।

ऐसा सा रहासा तामें किसन अन्नत आसा,

पानी में बतासा तैसा तनका तमासा है ॥ 30 ॥ [19]

इसमें 16 वर्णो के पश्यात् यति और अन्त में एक गुरु है।

कबीर पंथी मुकुन्द गुगली का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है-

गुरुजन को विवेक, दिखाऊँ चरित एक;

संत को है ऐसो टेक, एक पायो नाम है।

कबीर है निः संदेह, मालिका को मेर एह;

तमें होवे उजेह, खेह जाने दाम है।

संत साहेब का मत पाई, तीन लोक गत;

खिले तन षड्रत सत्नाम राम है।

ताको मैं चरित गाउँ कबीर पे बल जाऊँ;

साहेबप के नाम नाऊँ, आउको विश्राम है ॥ [20]

चौपाई :

जिसमें 16 मात्राएँ हो, अन्त में जगण अथवा तगण न हो। समकल के बाद समकल

हो, विषमकल के बाद विषमकल हो, उसे चौपाई छन्द कहते हैं।

हिन्दी के महाकाव्य 'पद्मावत्' 'रामचरति मानस' आदि इसी शैली में लिखे गये ।

जैन गूर्जर कवियों में विनयचन्द्र की 'उत्तम कुमार चरित्र चौपाई', कुशल लाभ का 'माधवानल चौपाई', वादिचन्द का 'श्रीपाल आख्यान', समय सुन्दर की सीताराम चौपाई, आनन्दवर्ध्दन सूरि की ''पवनाभ्यास चौपाई,'' आदि प्रबन्ध काव्यों में चौपाई-दोहों का ही निदर्शन है। कवि वादिचन्द के श्रीपाल आख्यान में दोहे-चौपाई का प्रयोग उल्लेखनिय है-

''आदि देव प्रथमिं नमि, अन्त श्री महावीर।
वाग्वादिनी वदने नमि, गरूड गुण गभ्भीर॥

सरसति सुभमति जये अणु सरि, गौर हरूआ गोयम मनि धरि।
बोलु एक हुं सरस अख्यान, सुण जे सज्जन सहु सावधान॥[21]

शमदमादि संपत्ति जुत जेही।
हिंसा क्रोध रहित मुनि तेही॥[22]

छप्पय :

कुण्डलिया छन्द की भाँति इसमें छः चरण होते हैं जिसके प्रारम्भिक चार रोला छन्द के और अन्तिम 2 उल्लाल के । धर्मवर्ध्दन की 'छप्पय बावनी' छप्पय छन्द के उदाहरण है। इनका एक छप्पय इस प्रकार है-

''जब ऊगे जग चक्ख तिमिर जिण वेला त्रासै।
प्रगद हसै जब पद्म, इला जब होइ उजासै॥

चिड़ीया जब चहच हैं, वहै मारग जिण वेला।
घरम सील सहु घरै, मिलै जब चकवी मेला॥

घुम घुमै माट गोरस घणा, पूरण वंछित पाईये।
जिनदतसूरि जिनकुशल रा, गुण उण वेला गाईये॥1॥[23]

''गुरू चोवीश के लक्ष पक्ष सब मत से न्यारो।
जा मांही अनुभव ज्ञान, भक्ति वैराग्य विचारो।
दत्त यदु संवाद, अनुपम एकादश माहीं।
जेही जानत भव शोक, काल गुण कर्म न साही।
ऐसी यह अद्‌भुत कथा, यथा मति ही जान ही।
श्री गुरु चरण जब उर बसे, मूलदास कथा बखान॥[24]

– मूलदास

हरिगीतिका :

इस छंद में 28 मात्रा और 8 चरण होते हैं। 3,6,10,13,17,20,24 और 27 मात्रा पर यति होती है। प्रत्येक चरण का अन्तिम वर्ण गुरु होता है। लयात्मक छन्दों में इस छन्द का विशेष महत्व है। श्री यशोविजय की दिकपट चौरासी बोल कृति से एक हरिगीतिका इस प्रकार है-

''प्यार हुं निखर्ये एक द्रव्यों, कहे श्री जिन आग में,
जिउं नाम घटत संठाण थापन द्रव्य मृद गुन भाव में।
यो जीव द्रव्यह केवलादिक, गुनह द्रव्यत भावते;
होई नियम पुद्‌गल द्रव्य को, तो तन नहीं व्यभिचारते।[25]

किन्तु उपर्युक्त नियमों का पालन मुक्तानंदजी की छंद रचना में नहीं मिलता -

गंभीर कोमल मनहरन अति धीर शब्द से सोहहिं।
रवि कोटि काति समान द्युति छबि देखि मुनिमन मोहहि॥[26]

कुण्डालिया :

यह मात्रिक विषम छन्द है। इसमें 6 चरण होते हैं। इसके पहले दो चरण दोहे के होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है। सम्पूर्ण छन्द में 144 मात्राएँ होती हैं। इस छन्द का प्रारंभिक और अंतिम शब्द एक ही होता है। इसका संकेत सूत्र दोहा **'रोला कुण्डलीतकर कुंडलिया होय'** अर्थात् दोहा और रोला को मिलाकर कुंडलिया छन्द बनता है। ब्रजभाषा में ध्रुवदास ने रहसिलता, प्रेमावली और निर्तविलास आदि अनेक वर्णनात्मक रनचाओं में इसका

व्यवहार किया है।

दीनदरवेश की कुडलियाँ अति प्रसिध्द है।

हिन्दू कहे तो हम बड़े, मुसलमान कहे हम्म,
एक मूंग दो झाड़ है, कुण ज्यादा कुण कम्म।
कुण ज्यादा कुण कम्म, कभी करना नहिं कजिया,
एक भगत हो राम, दूजा रहिमान सो रजिया,
कहे दीन दरवेश, दोय सरिता मिल सिन्धू,
सबका साहब एक, एक मुसलिम एक हिन्दू॥[27]

जैन कवि धर्मवर्द्धन की **'कुण्डलियां बावनी'** इस छन्द की दृष्टि से महत्वपूर्ण रचना है। इसमें कवि ने 57 कुण्डलियां लिखी हैं। एक कुण्डली देखिए -

डाकै पर घर ड़ारि डर, कूकरम करै कठोर।
मन में नाहि दया माया, चाहैं पर धन चोर।
चाहै पर धन चोर, जोर कुविसन ए जांणो।
मुसक बंधि मारिजै, घणी वेदन करि धाणो।
फल बीजा सम फलै, अब लागै नाहीं आके।
धरम किहां धरमसीह, डारि डर पर घर डाकै॥34॥[28]

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि गुजरात के सम्प्रदायो में छन्द प्रधान रचनाएँ लिखी गई। इन कवियों ने (सम्प्रदाय के कवियों ने) मात्रिक एवं वर्णिक-दोनों प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया। देवसाहब, रविसाहब मोरार साहब, प्राणनाथ आदि ने चौपाई छन्द में हजारों की संख्या में रचनाएँ की। अनेक कवियों ने दोहा-लेखन के विभिन्न रूपों को अपनाया है। शेख अहमद खट्टू सैयद मुहम्मद जौनपुरी, शेख बहाउद्दीन बाझन आदि सूफी कवियों ने गूजरी दोहे, लिखे हैं। अनेक कवियों ने अपने ग्रंथ मात्र दोहों में ही रचे हैं, उदाहरणार्थ कृष्णदास कृत ''ज्ञानप्रकाश।''

आधुनिक वैष्ण कवि दयाराम ने अपनी रचना दयाराम सतसई में 700 से अधिक दोहोंको संग्रहित किया है। देवसाहब, हरिसिंह ठाकुर, मुकुन्द गुगली, चरणदास आदि ने

कवित्त छन्द में रचनाएँ की है। अखा एवं दीनदरवेश की कुंडलियों भी जग प्रसिद्ध है । इसी प्रकार कबीर परंपरा के कवियों- संतों ने अपनी रनचाओं में रेख्ता, साखी, झूलना, जकड़ी आदि का भरपूर प्रयोग किया है। अखा, निरान्त, दयाराम आदि गुजरात के अनेक कवियों ने विपुल प्रमाण में साखियाँ लिखी है। रेणकी अदि छन्दों में निबद्ध देवासाहब, देवीदानदेथा, स्वामी नारायण सम्प्रदाय के ब्रह्मानंद की रचनाएँ तथा चांदरणा छन्द में बद्ध लालदास जी की रनचाएँ उल्लेखनीय हैं।

अलंकार विधान :

'अलंकार' अर्थात् आभूषण। 'अलं' का अर्थ है भूषण तथा 'कार' का अर्थ है करने वाला। अतः अलंकार का सामान्य अर्थ हुआ - किसी वस्तु को विभूषित करनेवाला साधन। जिस प्रकार आभूषण स्त्री के सौंदर्य को निखरता है उसी प्रकार अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौंदर्य में अभिवृद्धि होती है। अलंकार कथ्य की अभिव्यक्ति को सौंदर्य प्रदान करने के साथ-साथ कवि की कल्पना शक्ति के परिचायक होते हैं। कवि जिस विषय को अनुभूत करता है उसी रूप में न प्रगट करके उसे कल्पना के सहारे अधिक प्रभावशाली अस्तित्व प्रदान करता है।

गुजरात के संतों कवियों ने अपनी रनचाओं में विभिन्न अलंकारों का प्रयोग कर उन्हें अधिक प्रभावशाली बनाया है । संतों ने प्रायः सभी अलंकारों का प्रयोग किया है, किन्तु उपमा, रूपक तथा दृष्टांत का प्रयोग समझाने की दृष्टि के कारण अधिक हुआ है। जैन-गूर्जर कविओं ने अनुप्रास के बड़े सुन्दर प्रयोग किए है।

शब्दालंकार :

अनुप्रास :

''जीवन जरासा दुख जनम जरा सा तापै।
डर है खरा-सा काल शिरपै खरा-साग है ॥[29]
''हरि भगतीहि छांहितो, मुकति मुकाति बत पाय।
हरि भगति ही छांहतो, मुक्ती मुकती बत पाय॥564॥

-दायाराम [30]

ऐसा सा तापै किशन अनन्त आसा।
पानी में बतासा तैसा तनका तमासा है ॥30॥

– किशनदास [31]

यमक :

''सारंग देखि सिधारे सारंगु, सारंग नयनि निहारी ।''

–रत्नकीर्ति [32]

– शिखार सूत्र को डार के रे, शिखा सूत्र पुनि धार।
– कनक कामनी छाँडके रे, कनक कामनी पास।
– कर के मणि तजि कैं कछु ही अब, फेरहु रे मनका मनका।

– धर्मवर्धन [33]

अर्थालंकार

इन अलंकारों से मात्र स्वरूप -बोध ही नहीं होता अपित उपमेय के भाव भी उदबुद्ध होते दिखाई देते हैं।

उपमा :

दीपशिखा निंदक शुभ नासा।
मेघगर्ज सम वचन प्रकाश ।[34]
–सुख पावें की दुख लहें, लगी डगें नहिं प्रीति।
लपटि वृक्ष जिमि वल्लरी, छुटी न कबु यही रीति'' ॥117॥[35]

–दयाराम

– पूरण चन्द्र जिसौ मुख तेरो, दंत पंक्ति नचकुन्द कलीहो।
सुन्दर नयन तारिका शोभित, मानु कमल दल मध्य अली हो॥[36]

– समय सुन्दर

– सिस धरती या चाहिये, गुरु जैसा आकाश ।
वे बरसैं, वे झीलही, निपजै सकल विलास ॥

– अरजण भगत

रूपक :

– सत्यनाम चढने की सीढी नहीं पोथी, नहीं पाना ।
नैन – कमल निरखी त्योंने, सूरत – नूरत – निशाना ॥

– ''प्यास न छीपई दरस की, डूबि रही नेह – होजि ॥'' [37]

– '' काष्ट अग्नि संजोगते, धुवां प्रगट ज्युं होय,
जड़ चेतन बीच कल्पना, जीव कहावत सोय''

– छोटम[38]

– चलो अगम के देस, काल देखत डरे;
वहाँ भरा प्रेम का हौज, हंस केल्यां करे–''

–मीराबाइ [39]

– सांगरूपक

– ''राम कोण बनाव्यो चरखो, एना घड़नारा ने परखो ।
आवे ने जावे ने बोलावे, ज्यां जाऊँ त्यां सरखो ।
देवल देवल करे हकोंरा, पारख थई ने परखो ।

– रवि साहब

–''नायकान रासी यह वागुरिन भासी खासी,
लिए हांसी फांसी ताके पाश में न परना,
पारधी अनंग फिरे मोहन धनुष धरे,
पैन नयन बान खर तातें ताही डरना,
कुच है पहार हार नही रोमराई तृन,
किसन अमृत ऐन बैन मुखि झरना,
अहो मेरे मन–मृग खोल देख ज्ञान द्दग,
यह बन छोड़ि कहूँ और ठौर चरना।[40]

– किशनदास

– ''ज्ञान–घटता चढ़ आई अचानक, ज्ञान–घटा चढ आई।
अनुभवजल बरसो, बड़ी बुंदन कर्म की कीच रेलाई।

– अखा[41]

दृष्टांत :

– मेंहदी केरे पातज्यूँ, लाली लखी न जाय।

– श्यामदास

– ''वापी, कूप, तड़ाग के, नीर भिन्न नव होय ।
कहे प्रीतम एक आतमा, ज्ञान दृष्ट करी जोय ॥''

– प्रीतम[42]

– जैसे सर्प डसत है किनको, सो कहे लींबरस मीठा ।
तन अहंकार लाग्यो है जाको, तिन आतम हीन दीठा।

– देवा भगत

–''मच्छी खाडी परहरी किया समुद्रा बास।
तहां ज्ञानी निरभै भया, काल जाल नहीं फाँस॥

– ज्ञानीजी

उत्प्रेक्षा :

''तनु शुध खोय घूमत मन एसें, मानु कुछ खाई मांगा ।''

–आनन्दधन[43]

अपन्हुति :

नारी नहीं ए नागिणी, नर मेडक निरघार ।
कहे प्रीतम कैसे ग्रसे, लेखा नहीं लगार ॥

– प्रीतमदास

विरोधाभास :

''बानिक नटवरलाल की लिखत तोष दिन रैंन।
पान करें प्यासे मरैं, वनचर त्यों मम नेंन॥98॥

– दायाराम[44]

गुजरात के विभिन्न संम्प्रदायों के संत कवियोंने उपर्युक्त अलंकारों का सुंदर प्रयोग अपनी कृतियों, रचनाओं में किया है इसके अतिरिक्त उन्होंने विशेषोक्ति प्रौढोक्ति, काव्यलिंग, स्वाभावोक्ति, कारणमाला, अतिश्योक्ति आदि अनेक प्रकार के अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

भाषा :

भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। निराकार भावानुभूतियों को साकार रूप भाषा के विषयानुरूप समर्थ एवं सशक्त प्रयोग से प्राप्त होता है। इसलिये काव्य कला का यह एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। समुचित समर्थ शब्दभंडार, शब्दशक्तियों, मुहारवों तथा कहावतों के भावानुरुप और पात्रानुकूल प्रयोग कवि की भाषा की कसोटी के आधारभूत तंत्व हैं।

गुजरात में मध्यकाल में वैष्णव भक्त कवियों ने ब्रजभाषा में काव्य-रचना की । गुजरात के सम्प्रदाय बध्द और सम्प्रदाय निरपेक्ष दोनों प्रकार के कवियों द्वारा विपुल पदों की रचाना ब्रजभाषा में हूई है। सन्तों ने अपनी भाषा को सधुक्कड़ी कहते हुए जन प्रचलित भाषा में काव्य-रचना की । इसके अन्तर्गत खड़ी बोली, ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी आदि का समावेश हो जाता है। बाहर से आकर बसे हुए सूफीमत के कवियों ने अरबी, फारसी, तुर्की के शब्दों का जन-भाषा के साथ मिलन कर अपने धर्म का प्रचार तथा काव्य-रचना की जिसे उन्होंने गूजरी भाषा की संज्ञा दी। इस युग के जैन गूर्जर कवियों की कविता में विविध भाषा ज्ञान और उसमें काव्य-रस के निर्वाह की विलक्षणता देखने को मिलती है। ये कवि घुमक्कड प्रकार की वृत्ति के थे और विविध जगहों पर जाकर कहाँ की लोक भाषा में जन-जागृति का प्रचार करते थे। चारणी कवियों की रचनाओं में डिंगल भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा दुरस्थ क्षेत्रों के विभिन्न भाषा - भाषी राज्यों -प्रदेशों से आनेवाले प्रवासियों की भाषा का प्रभाव स्थानीय लोगों की भाषा पर पड़ा। गुजरात में हिन्दी में काव्य रचना करने वाले कवियों की रचनाओं की भाषा पर भी हिन्दी की विभिन्न बोलियों-उपबोलियों, दूसरी भाषाओं आदि का प्रभाव पडा ।

अतः इस युग की हिन्दी कविता में भाषा के जो विविध प्रयोग हुए है, उसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत है-

ब्रजभाषा :

गुजरात के वैष्णव भक्त कवियों ने ब्रजभाषा में साहित्य लिखा । दायाराम द्वारा ब्रजभाषा में साहित्य - रनचा की गई क्योंकि यह ब्रजराज (कृष्ण) की भाषा है। [45]

दयाराम द्वारा रचित काव्य का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

- " तनक बुराई तुरत भल, जामें अति परिनाम ।
कंठ कटे कटु ना कहे, सो न सयानो काम । [46]

- कंज खंजन मीन मृग शावकनि डारति वारि
भ्रकुटि पर सुरचाप वारत तरनि कुंडल हारि ।

- सूरसागर [47]

अन्य कवियों की भाषा में भी ब्रजभाषा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है-

- "अंजलि के जल ज्यो घटत पल पल आयु,
विष से विषय व्यवसाय विष रस के।
- पंथ को मुकाम कछु बाप को न गाम यह,
जैबो निजधाम तातें कीजे काम यशके"

- किशन दास

खड़ीबोली :

वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास
डोरें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास [49]

-संत प्राणनाथ

- बे मेवरे, कोहरी सेबरे, अरे कहां जात हो उतावरें
टकु रहो नइ खरे।
हम जाते बीकानेर साहि जहांगीर के भेजे ।
हुकम हुया फुरमाण जाइ मानसिंघ कुं देजे ।
सिद्ध साधक हउ तुम्ह चाह मिलणे की हमकुं,
वेगि आयउ हम पास लाभ देऊंगा तुम कुं ॥1॥

- समयसुन्दर[50]

– ''एक दिन भारत यह सब सरताज था,

जिस जमाने में यहाँ पर राज था ।[51]

– मुशर

'' ये दुनियां के लोग कीड़े मकोडे,

गेहूँ शहर पर दौड़ते पोंडे । डूबते बहुत निकलते थोड़े।[52]

फारसी :

एकदरे मुतलक तुई, दादर जहानी,

दानी तो हमेरा ततुरानी जातो दानी ।

आलम हमें नाबूद जतो बूंद नुमाचद

हर मुरदेश तो मेकुनी जी रूह वफानी ॥ [53]

– मनोहर स्वामी ।

– '' व लाल हुम्मा ऐयून, खारज बला दखल ।

वल हुम्म लेस इगन्, व ल हुम्न लेस अकल । [54]

– प्राणनाथ

राजस्थानी

कवि जिनहर्ष की सुललित एवं साहित्यिक राजस्थानी भाषा का एक उदाहरण देखिए

– ''सभा पूरि विक्रम्म, राइ बैठो सुविसेसी।

तिण अवसर आवीयउ, एक मागध परदेशी।

ऊभो दे आसीस राइ पूछड़ किहां जासौ।

अठा लगैं आवीयौ, कोइ तैं सुण्यौं तमासौ॥

कर जोड़ि एम जंपइ वयण, हुकम रावलौ जो लहुं।

जिनहर्ष सुणण जोगी कथा, कोतिग वाली हूं कहुं॥1॥[55]

– '' गबरी चित्त में चेतिये, सुं सुतो उठ जाग।

आलस निद्रा परहरो, हरि भजन को लाभ''[56]

– गबरीबाई (चित्त चेतन को अंग)

– मन बसे तेम तूं मांहरे मो मन बसियों महमहण [57]

– इसरदास

पंजाबी

नानक आदि पंजाबी संतों द्वारा गुजरात में की गई धार्मिक यात्राओं या तत्कालीन लोकरूचि के प्रभाव के कारण गुजरात के कवियों, पर खडीबोली, राजस्थानी के साथ-साथ पंजाबी भाषा का प्रभाव भी पड़ा है-

– ''दादू याला नूर दा, आसिक अरसि पविति
अठे पहर अल्लाह दाषुं मुंह टिटठे जीवंति
दादू के कहि गये, अन्त न आवे और।
हमकूँ कहतें जात है, केते कहसी होर ॥[58]

– दादू दयाल

– ''कीडी खाने खांड कु, रविदास झीड़ी होय।
जो मन को गल कीजिये, तो हाथ ने आवे कोय।[59]

– रवि साहब (सूक्ष्म शिखामण को अंग)

''मूरति मोहणगीरी दिटठड़ां आवै दाय।
चरण कमल दड्डे सोहियां, मन भमर रह्यो लोभाय॥1॥
सनेही पास जिणंदा वे, अरे हां सलूणे पास जिणंदाबे।
तूं ही यार सनेही साजन तू ही मैडा पीऊ।
नेणे देखण ऊभहै, मिलने कूं चाहै जीव॥2॥[60]

सिन्धी भाषा :

''रे पिरीअम मंगा सो लाड करे।
हेडी किज कां मुदसे, खिलंदडी लगा गरे।[61]

– प्राणनाथ

– साहिब मइडा चंगी सूरति; आ रथ चढीय आवंदा है भइण ।
नेमि मइकुं भावदा है।

भावंदा है मैकुं भावंदा है, नेमि असोढे भानंदा है। ॥1॥

आया तोरण लाल असाडां, पसुय देखि पछितांउदा है[62] ॥2॥

– ''हालु असां जो लाय रे, तोहे सब मालूम रे,

मझे खमां मझे बरां अला मझे लागी बहिरे।

– दादू दयाल [63]

मराठी :

''मूल स्थायी मिठ बंध बांधो, हो जोई ना काल कलाई ।

गुरु वचने अढियाना दृढ बंधाई, जे वीना चंचल नाहीं [64]

– चक्रधर

– ''गोब्चंद गोजारे तुम्हे अम्हचांह गुरु, तुम्हे अम्हचा ग्यान

तुम्हे अम्हचाह देव, तुम्हे अम्हचां ध्यान । [65]

– दादू दयाल

जाटी भाषा :

'' एक चोरा अंधेरी आंखा नहीं, और ठौर नहीं बुधमन ।

विषम जल ऐसे मिने, पीउ आए मुझ कारन ।'' [66]

अरबी :

''अस्मा हिंद मुस्लिम अनी कमल सिदक ।

मा कलम अनी किजबो, मा कुम्म कलमा हक ।'' [67]

– प्राणनाथ

गुजराती :

हैया मा रे होळी बळे कीम करी रमुं वसन्त । [68]

– ऊपनो ताप निश्वास मूके ।

कामिनी कंठनी माल सूके ॥16॥

सूफी गयुं तन हेली रे, वैली ऊतरे बांह ।
धरतीअे लेतां जोती रे, अंगूठी अे मांह ॥ 18 ॥

–मास

– "परमेसर शुं प्रीतडी रे, किम कीजे किरतार,
प्रीत करता देहिलि रे मन न रहे खिण एकतार रे,
मनडानी वातो जोज्यो रे, जुजुईधातो रंग बिरंगी रे,
मनडुं रग बिरंगी ॥ 9 ॥

– आनन्दवर्द्धन[69]

–"रझल रझल राजे मुए पे ठरे न ऐकु ठुर,
हजू लगी कही ना करे मनमां मतलबं नुर ॥[70]

– राजे

काच्छी :

"स्वस्थ ता सौ को करे, परमारथ करे न कोय,
हथो छड़े मसाड़ में, कुवाडो छड़े न कोय"

–मेकनदादा [71]

उर्दू :

"गफलत में गाफिल रह्या, हरि कुछ जान्या नाहे ।"

– रविसाहब [72]

डिंगल भाषा :

"भोगवि किते भू किता भोगवसी, मांहरी करइ भरै।
ऐंठी तजि पातलां उपरि, कुंवर मिलि मिलि कलह करैं ॥1॥
धपटी धरणी केतेइ धुंसी धरि अपणाइत कई ध्रूवे।
धोवा तणी शिला परि धोबी, हुं पति हुँ पति करै हुवै॥2॥ [73]

गूजरी :

" जिसे इश्क का तीर भारी लगे ।
उसे जिन्दगी क्यों न भारी लगे ।

न होवे उसे जग में हरगिज करार ।
जिसे इश्क की बेकारी लगे ।
वली को कहे तूं अगर एक वचन ।
रकीबों के दिल में कटारी लगे । '' [74]

– वली मुहम्मद

''सुंनो मत्लब रही अब यों अमी का,
लिखे गूजरि मने युसुफ – जुलीखा ।'' [75]

– मोहम्मद अमीन

गुजरात के विभिन्न सम्प्रदाय के संतों कवियों की हिन्दी रचनाओं पर विभिन्न भाषा-शैलियों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। इन कवियों की रचनाओं में संस्कृत के तत्सम् अर्ध्द तत्सम, तद्भव, देशज और तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के कारण प्रचलित हुए अरबी-फारसी-उर्दू भाषाओं के शब्दों का कुशल प्रयोग मिलता है।

विदेशी शब्दों के साथ-साथ गुजराती के ठेठ शब्दों तथा परिमार्जित शब्दों का भी उसी कुशलता से प्रयोग इन कवियों ने किया है।

इन कवियों ने अनेक स्थानों पर दीर्घ मात्राके स्थान पर ह्रस्व मात्रा तथा ह्रस्त मात्रा की जगह दीर्घ मात्राओं का प्रयोग किया है।

कई संतों एवं कवियों ने अपने कथ्यों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए अपनी रचनाओं में कहावतों एवं मुहावरों को नगीनों की भांति जड़ दिया है। इनके स्वाभाविक, प्रयोगों से इनकी कविताएँ सजीवन हो उठती है। मांर्कड़ कृत ''प्रबोध बत्तीसी'' किशनदास की 'उपदेश बावनी', 'अखा के छप्पा' आदि में मुहावरों -कहावतों का सफलतापूर्वक प्रयोग हुआ है। गुजरात के संतों एवं भक्त कवियों की हिन्दी से सुसज्जित है। इन किवयों द्वारा प्रयुक्त कुछ मुहावरें और कहावतों के यहां उदाहरण दृष्टव्य है। काव्य-रचनाएँ अनेक मुहावरों और कहावतों के यहाँ उदाहरण दृष्टव्य है।

1) **''भौर भयो उठ जागो मनुवा,**
साहेब नाम संभारो।''

वैष्णव कवियों कृष्णदास अधिकारी, आदित्यराम, बैजुबावर, मीराबाई, भाषण, गिरधर, त्रिकमदास, नरिसंह महेता, दयाराम आदि ने अपने पद, भजन, कीर्तन विभिन्न राग-रागिनियों में बद्ध कर गा-गाकर सुनाते थे। बैजु बावरा, दयाराम आदि अनेक वैष्णव कवि शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता थे।

शेख बहाउद्दीन 'बाझन', वली मुहम्मद, काजी महमूद दरियायी जैसे गूजरी कवियोंने, शायर-संगीत की विविध गान-पद्धतियों एवं राग-रागिनियों पर आधारित काव्य-साहित्य लिखा।

निर्गुण सम्प्रदाय के संतों ने पद रचना किसी-न-किसी राग में की थी। जिस प्रकार अन्य ज्ञान, उन्हें सत्संग से प्राप्त हुआ था, इसी प्रखार सत्संग का ज्ञान उनके संगीत से प्राप्त हुआ था। संतों के ये पद भजनों में गाये जाते थे। गुजरात में रामकबीर सम्प्रदाय में संगीत को विशेष स्थान दिया गया है। समय-समय पर गाने कि वभिन्न रागों में पद लिखें गये हैं, तथा उनके भजन संग्रहों में इस प्रकार विभिन्न रागों में गाये जाने वाले पदों को संकलित किया गाया है।

ज्ञानजी की परम्परा के अनेक सन्त, कवियों ने विभिन्न रागों में रचनाएँ की थीं। सन्त, दादू के शिष्य जगाजी ने अनेक रागों में रचनाएँ की है, जो उस मन्दिर के ''बोधपाठ'' ग्रंथ में संकलित हैं।

गुजरात के स्वामी नारायण सम्प्रदाय के ब्रह्मानंद आदि कवियों ने भी सेंकड़ों संगीतात्मक पदों की रचना की है। जैन कवि आनंन्दघन तो राग-रागिनियों के पंड़ित थे। मालदेव, जिनहर्ष, धर्मवर्द्धन, समयसुन्दर आदि जैन कवियों ने प्रसिद्ध देशियों, ख्यालों तर्जो आदि का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया।

गुजरात के हिन्दी साहित्य में बसन्त, मल्हार, विहाग, सोरठा, दीपक, बिलावल, केदार, टोड़ी, सारंग, जयजयवन्ती, आसावरी, भीम पलासा, प्रभात सांभेरी, नट, मालकोस, मारु, सदर, होरी, भैरव, रामकली, ठुमरी, विभास, पूर्वी, खमांज, सोहिणी, संकेत, काकी मेवाड़ा आदि विभिन्न राग-रागिनियों तथा कहरवा, एक ताल, तीन ताल, चौताल, झपताल, हींच, दादरा, रूपक, धमार आदि विभिन्न तालों का प्रयोग मिलात है। कहीं कहीं लोक धुनों, लावणी-पवाडा शैली, ख्याल - नौटंकी शैली का भी प्रयोग हुआ है।

उदाहरणार्थ विभिन्न तालों एवं रागों में बद्ध पद दृष्टव्य है।

– राग मल्हार

''मे केसे करूं पीया बसे मधुपुर जाय,
मेरी तो कछ्युं लेहे न पीर। में केसे करूं.....
अेक श्रावन मेरे आंगन बरषे, दुज्यो सावन दृग टबके नीर,
आवन को आली अवध बीत गयी, बीकल भयो मन धरे न धीर
केहे भट्टु अब कबज्यों मीलेंगे, दया को प्रीतम बल को बीरा।''[82]

– दयाराम

– रागसोरठ–ठुमरी

''सामलिया तोरे सरने आये की लाज।
मैं अवगुनकारी, ना गुन–सागर, मेरा गुनाह बख्सो ब्रजराज।'' [83]

– राग सारंग–आसावरी

''अब हम अमर भये, न मरेंगे।
या कारण मिथ्यात दियो तज, क्यूं देह धरेंगे।
राग–दोस जगबंध करत हैं, इनको नास करेंगे।
मर्‌यो अनंत काल ते प्राणी सो हम काल हरेंगे।''[84]

संदर्भ सूची

1) गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन पृ.355
2) विनयचंद्र कृति कुशुमांजलि, संपा. भंवरलाल-नाहटा पृ.80-84
3) दयाराम रसथाल पद संख्या 23 पृ.71 संवत 2001 संस्करण
4) वस्तानी साखिओं विरह को अंग ह.प्र.सं.17 डॉ. योगीन्द्र त्रिपाठी
5) मुक्तानंद काव्यम् पृ.77
6) धीरा-गुजराती संतों की हिन्दी वाणी पृ 231
7) दयाराम कांव्य-संग्रह पृ. 374
8) ब्रह्मानंद काव्य-मोतीलाल त्रिभोवनदास फौजदार, सं. 1966
9) जैन गूर्जर कवियों की हिन्दी कविता पृ. 85
10) वही पृ.118
11) राजस्थान एवं गुजरात के संत एवं भक्त कवि, पृ. 268-269।
12) राजस्थान एवं गुजरात के संत एवं भक्त कवि, पृ. 269-270
13) मुक्तानंदकाव्यम्, पृ. 51
14) श्रीकृष्ण लीला काव्य, पृ. 149
15) संतप्रिया -26
16) गूर्जर साहित्य संग्रह प्रथम भाग, पृ. 579
17) भजन संग्रह धर्मामृत, पृ. 8
18) हरिलीला षोडशकला, पृ. 8, 164 श्री कृष्ण लीला काव्य पृ. 58
19) गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ, डॉ. अंबाशंकर नागर उपदेशबावनी पृ. 169
20) गुजराती संतों की हिन्दी वाणी डॉ. अंबाशंकर नागर, पृ100
21) जैन गूर्जर कविओ, भाग-3 पृ. 803 मंगलाचरण
22) मुक्तानंद काव्यम् पृ. 167
23) धर्मवर्धन ग्रंथावली, संपा, अगरचन्द नाहटा पृ.105
24) मुकुन्द कृत कविता, प्राचीन काव्यमाला भा. 11 सं. 1945-46
25) गूर्जर साहित्य संग्रह, प्रथम भाग पृ.576
26) मुक्तानंदकाव्यम् काव्यम, पृ. 199
27) संतकाव्य पृ. 437
28) धर्मवर्धन ग्रंथावली संपा, अगरचन्द नाहटा, पृ. 27
29) गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ डॉ. अंबाशंकर नागर, द.169

30) दयाराम सतसई -संपा, डॉ. अबाशंकर नागर ।
31) गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ, पृ. 169
32) सं. अगरचन्द नाहटा, धर्म बावनी, धर्मवर्धन ग्रंथवाली पृ 3
33) वही. पृ. 13
34) मुक्तानंद काव्यम् पृ. 199
35) मध्यकालीन गुजरात का हिन्दी काव्य पृ-95
36) समयसुन्दर कृत कुसुमांजलि पृ. 26।
37) स्थूलि भद्र मोहन वेलि ।
38) छोटमवाणी, पृ. 255
39) गुजरात के संतों की हिन्दी वाणीं पृ. 52
40) अम्बाशंकर नागर, गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ पृ.167
41) अक्षय रस पृ. 98, पद 11
42) प्रीतमदास नी वाणी, पृ. 111-112
43) आनन्दघन पद संग्रह
44) दयाराम सतसई ।
45) दयाराम सतसई दोहा 708
46) वही सं. 451
47) सूर सागर पृ.355
48) गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ उपदेश बावनी पृ. 165
49) प्राणनाथ कृत कलस (हिन्दी) पृ16 चौ.
50) समयसुन्दर कृत कुसुमांजली, अगरचन्द नाहटा पृ. 393
51) भजनसागर पृ. 618
52) मध्यकालीन हिन्दी साहित्य अध्ययन एवं अन्वेषण पृ. 100
53) अखानी वाणी अने मनहर पद, पृ. 413
54) प्राणनाथ कृत कुलजम शरीफ (सनंध) प्र. 2, चौ-2
55) जिनहर्ष ग्रंथावली, अगरचन्द्र नाहटा, बोली, कथा, पृ. 435
56) गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी, पृ. 241
57) राजस्थान एवं गुजरात के संत एवं भक्त कवि. पृ. 261
58) संत सुधासार पृ. 281
59) रविसाहब नी साखिओ पृ.237
60) जिनहर्ष ग्रंथावली, संपा. अगरचन्द्र नाहटा पृ. 225

61) कुलजम शरीफ (सिन्धी) प्राणनाथ, प्र. 4, चौ.-1
62) समयसुन्दर कृत कुसुमांजली, अगरचन्द्र नाहटा, पृ.132
63) हिन्दी साहित्य को गुजरात के संत कवियों की देन पृ. 280
64) डॉ. नागर अभिनन्दन ग्रंथ
65) संतसुधासार पृ. 283
66) ''कुलजम शरीफ,'' ''प्रकाश'' (हिन्दी) प्राणनाथ, पृ. 7 चौ. 10
67) कुलजम शरीफ, संनंध (हिन्दी) प्राणनाथ, पृ. 2 चौ. 2
68) नरसिंह महेता कृत काव्य, पृ. 524
69) भजन संग्रह, धर्मामृत, पृ. 73
70) राजेकृत काव्य संग्रह, पृ. 114
71) हिन्दी, साहित्य को गुजरात के संत कवियों की देन, पृ. 281
72) रविसाहब नी साखियों, पृ. 281, 306, 236
73) जिनहर्ष ग्रंथावली, संपा. नाहटा, पृ. 225
74) हिन्दी साहित्य को गुजरात के संत कवियों की देन पृ. 139
75) दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा - श्री राहुल सांस्कृत्यायन, पृ. 30
76) भजन संग्रह धर्मामृत पृ. 26
77) प्रीतमवाणी, पृ. 91
78) गरवी कीर्तन माला, पद 347, पृ. 153
79) राजे भगत पृ. 227
80) जैन गूर्जर कवियोंकी हिन्दी कविता, पृ. 264
81) हरिसिंह ठाकुर कृत ज्ञानकटारी, - 18
82) ''दयाराम रसथाळ,'' पद संख्या 23, पृ. 71
83) गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी, पृ-38
84) गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ, पृ. 148